माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 2014 को राजभवन, हरियाणा, चण्डीगढ में आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह में दिया गया भाषण।

शिक्षक सम्मान दिवस के अवसर पर उपस्थित हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा जी, इस प्रदेश की शिक्षा मंत्री श्रीमती गीता भुक्कल जी, शिक्षा विभाग की Principal Secretary श्रीमती सुरीना राजन जी, मेरी सचिव श्रीमती नीलम पी0 कासनी जी, शिक्षा विभाग के निदेशक श्री विवेक अत्रेय जी, इस महत्वपूर्ण अवसर पर आमंत्रित महानुभाव, शिक्षाविद, प्रदेश के शिक्षकगण, सभी शासकीय अधिकारीगण, कर्मचारीगण, पत्रकार बंधुओ, भाईयो और बहनो!

यद्यपि यह कार्यक्रम शासकीय योजना के द्वारा है। राजभवन आप सबका है। लेकिन राज्यपाल के नाते, क्योंकि राजभवन ही मेरा निवास है, इसलिए आज इस कार्यक्रम में आप सब जो यहां पर उपस्थित हुए हैं, उनका यहां स्वागत करता हूं। डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जो उपराष्ट्रपति थे, राष्ट्रपति भी थे, लेकिन इससे ज्यादा वे शिक्षाविद थे, एक philosopher थे और primerly वे एक टीचर थे, उनके जन्मदिन के उपलक्ष में आयोजित इस समारोह में सभी उपस्थित महानुभावों का मैं यहां पुनः स्वागत और अभिनंदन करता हूं।

कई तरह के दिवस अपने देश में मनाये जाते हैं। लेकिन इस देश की नींव जिस माध्यम से, जिस सिस्टम से मजबूत है, जिस पर सम्पूर्ण देश का भविष्य निर्भर करता है, वह शिक्षा है। यदि शिक्षा के बारे में विचार किया जाये, खासकर शिक्षक के बारे में विचार किया जाये तो जितने भी दिवस मनाए जाते हैं, उन सबमें आधारभूत दिवस यह है। मुझे ऐसा लगता है कि राष्ट्रपति महोदय ने जब अपना जन्मदिन मनाने के लिए देशवासियों को अवसर प्रदान करने के बारे में सोचा होगा तो उन्होंने शिक्षक का सम्मान करने के बारे में सोचा होगा। किसी भी आदमी के जीवन में उसका जन्मदिन बहुत महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने अपना जन्मदिन अध्यापकों के लिए समर्पित कर दिया। वे स्वयं अध्यापक थे, इसका यह भी कारण हो सकता है, लेकिन इससे ज्यादा महत्वपूर्ण कारण यह है कि अध्यापक के बिना देश का और देश के भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता।

देश में दो संसाधन बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक तो भौतिक संसाधन हैं। भौतिक संसाधनों का उपयोग करना देश की समृद्धि के लिए बहुत आवश्यक है। लेकिन भौतिक संसाधन, जिसको आज ज्यादा महत्व दिया जाता है, से महत्वपूर्ण और एक संसाधन है। वह है मानव संसाधन। मानव संसाधन की जो देश चिंता नहीं करेगा, सिर्फ भौतिक संसाधन के पीछे ही पड़ेगा, वह तरक्की नहीं कर पाएगा। जिस तरह से विज्ञान का दोहरा उपयोग है, आई.टी. का दोहरा उपयोग है, सोशल मीडिया का भी दोहरा उपयोग है, ये रचना के लिए भी काम कर सकते हैं, ये संहार और विनाश का भी काम कर सकते हैं, उसी तरह बिना मानव संसाधन का योग्य ढंग से विकास किए बिना निरा भौतिक संसाधन का विकास देश को तरक्की नहीं दे सकता, देश को प्रगति नहीं दे सकता।

देश में किसी भी चीज की कमी नहीं है। पूरे विश्व के अंदर जितने देश हैं, लगभग 193 देश होंगे विश्व के अंदर, अगर 193 देशों का आप भूतकाल देखिए, उनकी संस्कृति देखिए, उनकी परम्परा देखिए, उनका बायोडाटा देखिए और फिर जब आप भारत देश का बायोडाटा देखेंगे तो वह सर्वोत्तम होगा। विश्व का कोई देश ऐसा क्लेम नहीं कर सकता कि वहां पर भगवान ने आकर अवतार लिया हो, ऐसा कोई देश नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर भगवान ने अपने दूत भेजे होंगे, पुत्र के रूप में किसी को भेजा होगा, लेकिन भारत ही केवल एक ऐसा देश है जिसमें भगवान ने एक बार नहीं कई बार अवतार लिया है और अवतार लेने के बाद भारत की महत्ता को बताया है। भारत के अंदर एक विशेष प्रकार की जीवन–पद्धति विकसित हुई है। इस देश की पहचान विज्ञान नहीं है। इस देश की पहचान आध्यात्मिकता है और बिना आध्यात्मिकता का विकास किए मानव संसाधन का विकास नहीं हो सकता।

माननीय मुख्यमंत्री जी गीता का संदर्भ दे रहे थे। गीता का संदर्भ जब आएगा तो डा0 राधाकृष्णन का नाम जरूर आएगा। क्योंकि उन्होंने भी गीता का अनुवाद किया है। डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने व्यक्ति को सिर्फ व्यक्ति नहीं कहा, मानव को मानव नहीं कहा, इसके साथ एक विशेषण जोड़ा। उस विशेषण का जब उल्लेख करते हैं तब समझ में आता है कि भारत का व्यक्ति कैसा होता है। उस मानव के साथ, उस man के साथ डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जो विशेषण जोड़ा वह है Spiritual, Spiritual man. भारतवर्ष का जो आदमी है वह स्वभाव से Spiritual है। यह तो रूसो ने भी कहा है कि जब व्यक्ति पैदा होता है तो वह भगवान के बहुत नजदीक होता है। लेकिन जैसे–जैसे वह समाज में जीवनचर्या करता है, बहुत सारी चीजें सीखता है, समाज में विचरण करता है तो धीरे–धीरे वह भगवान से दूर जाता है। भगवान से दूर हो जाता है के मायने हैं–उसको माया घेरती है, उसको संसार घेरता है, उसको विकृतियां घेरती हैं। इसलिए रूसो ने यह कह दिया है कि आदमी तो बहुत अच्छा होता है, इसको तो समाज बिगाड़ता है। आदमी को समाज नहीं बिगाड़ पाये इसका तरीका क्या है। एक ही तरीका है कि मानव नाम का जो संसाधन है इसको ठीक करें। इसको बिना ठीक किए आपकी भौतिक प्रगति देश के भविष्य को ठीक नहीं कर सकती। 21वी शताब्दी में सबसे बड़ा संकट यही है।

मानव संसाधन कोई नया शब्द नहीं है। राज्य के अंदर हम शिक्षा विभाग कहते होंगे। लेकिन केन्द्र में क्या कहते हैं? केन्द्र में तो Department Human Recourses का ही है। मैं बात लंबी कह गया। लेकिन मैं इस बात पर जोर देना चाहता था कि डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस राज को समझा, इस प्रयोजन को समझा, इस उद्देश्य को समझा। उन्होंने कहा कि मानव संसाधन को ठीक करने के लिए तय किया जाए कि यह भगवान से दूर न जाए। गीता के अंदर भी तो भगवान ने क्या कहा है? दो ही तरह के गुण बताए हैं। उसमें भी संपदा की बात की है। गीता की अगर आप जानकारी रखते हो तो उसमें भी दो तरह की संपदा की बात की गई है। एक संपदा दैवीय, Godly है, Devine है और दूसरी संपदा दानवीय है।

ये दोनों संपदाएं व्यक्ति के पास हैं। आखिरकार दुर्योधन और युधिष्ठिर में फर्क क्या था? दुर्योधन के चरित्र पर, उसके मन–मस्तिष्क पर दानवीय गुण का ज्यादा

प्रभाव था। और युधिष्ठिर के मन–मस्तिष्क पर Devine, दैवीय गुणों का ज्यादा प्रभाव था। इसलिए मानव संसाधन की बात करते समय आप किसी को भी याद करिए, महर्षि अरविन्द को याद करिए, महात्मा गांधी को याद करिए, डॉ राधाकृष्णन को याद करिए, किसी भी महापुरूष को याद करिए, जब भी कभी मानव संसाधन की बात होगी तो इन दोनों की बात होगी। आदमी क्रीमिनल क्यों बनता है? क्योंकि समाज में आने के बाद वह क्रीमिनलाजेशन की ओर जाता है। इसलिए कुछ ऐसा करना जरूरी है कि यह क्रीमिनलाजेशन की ओर नहीं जाए। एक आदमी क्रीमिनल है और दूसरी आदमी विद्वान है। फर्क क्या है? क्योंकि पहले का दिमाग क्रीमिनल है।

इसलिए इस तरह का जो मानव संसाधन का विकास है, उसे ठीक करने की दृष्टि से जो काम होना चाहिए वह काम कौन करता है? शिक्षक करता है। परिवार में सबसे पहले शिक्षा दी जाती है। लेकिन परिवार के बाद जो अगली शिक्षा दी जाती है वह शिक्षक द्वारा दी जाती है। यह शिक्षक बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन आज बड़ी दिक्कत हो गई है। आज शिक्षक के बारे में क्या कहते हैं–The man fit for nothing is fit for teacher. ऐसा लगता है कि यह जो शिक्षक का प्रोफैशन है उसे व्यक्ति आखिर में चयन करता है। सबसे पहले वह दूसरे प्रोफैशन की और जाना चाहता है। लेकिन मेरा तो उल्टा सोचना है The man who is fit for everything, it fit for teacher. अध्यापक बनने की जो योग्यता रखता है, काबलियत रखता है, उसे आप कोई भी काम दे दीजिए। क्योंकि उसके अंदर वह क्षमता, वह काबलियत होगी, उसके अंदर वह गुणवत्ता होगी, जिसके कारण वह जिस भी क्षेत्र में जाएगा वह सफल हो जाएगा। अपने सामने हैं डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन। वे भी तो एक टीचर थे न? लेकिन वे जिस क्षेत्र में गये, उसमें अद्वितीय, उच्चकोटि के बने।

देश स्वतन्त्र 1947 में हुआ। देश स्वतन्त्र होने के बाद सबसे पहले सरकार ने सोचा कि अपने देश की शिक्षा पद्धति में, खासकर Higher Education में आमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए। देश स्वतन्त्र होने से पहले कौन सी शिक्षा थी? सबसे बड़ा रोना तो वही था। महात्मा गांधी तो इसीलिए रोते रहे कि देश की शिक्षा को बदलो। देश स्वतन्त्र होने से पहले अपने देश में जो शिक्षा थी वह आदमी को कलर्क बनाती थी। वह आदमी को अपनी परम्परा से तोड़ती थी। वह आदमी को अपनी पहचान से दूर रखती थी। उस शिक्षा के माध्यम से अपने देश का जो स्वाभिमान है, उसके अंतःकरण में जगता नहीं था। इसलिए उस समय की शिक्षा को कौन सी शिक्षा कहा गया है? three R. three R का मतलब है– एक reading, दूसरा writing और तीसरा earthmatic. जिसको लिखना आ गया, पढना आ गया और हिसाब–किताब लगाना आ गया, वह शिक्षित हो गया।

जिसको लिखना, पढना और हिसाब–किताब लगाना भर आ गया तो वह क्या बनेगा? वह तो कलर्क बनेगा। वह देश का स्वाभिमान लेकर, मस्तक उंचा करके, आगे चलने वाला व्यक्ति कैसे बनेगा? क्योंकि उसको तो यह पढाया ही नहीं गया। इसलिए बुनियादी शिक्षा के नाम पर महात्मा गांधी हमेशा यह कहते रहे कि हमें three R की जगह three H चाहिएं। इस three H का मतलब है हैड, सबसे पहले इस हैड का

विकास चाहिए, इस मस्तिष्क का विकास चाहिए और इस मस्तिष्क का विकास ऐसा चाहिए कि आदमी क्रीमिनल न बने, Decriminalization of Mind. आदमी अपराध कब करता है? जब उसका Mind criminal बनता है। आप उसको उल्टा करिए और इसलिए three H में उन्होंने कहा है कि व्यक्ति के मन व मस्तिष्क का विकास करो। दूसरे H का मतलब होता है Hand. हाथ से जो भी काम करना है वह वही काम करना चाहिए जिसके लिए आपकी आत्मा आपको प्रेरित करती है, आपका अन्तःकरण प्रेरित करता है, आपकी बुद्धि प्रेरित करती है। आपकी बुद्धि में, आपके मन में, आपके मस्तिष्क में और हाथ में, इन दोनों के अंदर मेल होना चाहिए।

तीसरे एच का मतलब है Heart. अब जरा कल्पना करो कि एक व्यक्ति जो सोचता है वही उसकी भावनाएं कह रही हैं, उसकी आत्मा की आवाज कह रही है। और जो वह सोच रहा है, जो उसकी आत्मा की आवाज कह रही है, उसी को वह कर रहा है। इन तीनों में इतना मेल है। आप कभी काम करने जाते हो तो आपके मन में दद्वं आता है कि नहीं? जब कोई आपको रिश्वत देता है या आप रिश्वत मांगते हो तो आपके मन में दद्वं आता है या नहीं? आपकी बुद्धि कहती है कि मत करो और बुद्धि कई बार न कहे तो आत्मा तो जरूर कहती है कि मत करो। जब कोई दीन–दुखी किसान आपके पास काम के लिए आता है तो आप उसका काम करने लायक अगर हो, और आप जब गड़बड़ करने लगते हो तो जरूर आपकी आत्मा कहती होगी मत करो, यह गलत है। लेकिन आत्मा के कहने के बाद भी, बुद्धि के कहने के बाद भी आपका हाथ वह काम करता है। इसका मतलब यह है कि जो काम आपकी आत्मा कह रही है वह काम आपके हाथ से नहीं हो रहा, दोनों में Coordination नहीं है। इसीलिए महात्मा गांधी कहते थे कि हमको three R नहीं हमें three H चाहिएं। कोई भी आप काम करते हो उसमें तीनों का समन्वय चाहिए। बुद्धि का, हृदय का और आपके हाथ का।

ऐसे व्यक्ति आप कैसे तैयार करेंगे? ऐसे व्यक्ति को तैयार करके देखिए तो आप। कानून से Corruption नहीं मिटेगा। ऐसे व्यक्ति के निर्माण से Corruption मिटेगा। ऐसे व्यक्ति का निर्माण कहां होगा? कहीं फैक्ट्री है क्या? यह घर में होता है, विद्यालय में होता है। यह करता कौन है? यह शिक्षक करता है। इसीलिए डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षक को इतना बड़ा महत्व दे दिया, कोई ऐसे ही नहीं दे दिया। देश स्वतन्त्र होने के बाद जिस तरह की शिक्षा हम चाहते थे उसके लिए कोठारी कमीशन आया, मोलालिया कमीशन आया, कई कमीशन आए, लेकिन कमीशन आने के बाद कुछ ज्यादा परिवर्तन दिखा नहीं अभी तक शिक्षा में।

मुझे खुशी है कि हरियाणा बहुत आगे जा रहा है, बहुत सारी बातों में बहुत आगे जा रहा है। मैं शिक्षा विभाग का भी अभिनन्दन करना चाहता हूँ कि इन्होंने छोटे से presentation के मामले में भी अच्छी तस्वीर प्रस्तुत की है। लेकिन शिक्षक दिवस के अवसर पर डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन मनीषी शिक्षक का जो महत्व प्रतिपादित करना चाहते थे उसका स्मरण करने की जरूरत है। उसके योग्य विकास के बिना कोई भी परिवर्तन देश में नहीं हो सकता।

स्वामी विवेकानंद का स्मरण करो। स्वामी विवेकानंद का आखिर टीचर कौन था? उनका गुरू कौन था? वे तो नरेन्द्र थे न? कैसे बन गए स्वामी विवेकानंद? उनके गुरू ठाकुर रामकृष्ण परमहंस थे। स्वामी विवेकानंद अच्छे गीत गायक थे। किसी कार्यक्रम में आए तो बंगाल के लोगों ने नरेंद्र की तरफ इशारा किया कि इसका गीत सुनो। ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ने उनका गीत सुना और गीत सुनकर इतने अभिभूत हो गये, इतने मोहित हो गये कि नरेंद्र को पास में बुलाया और कहा कि तुम आया करो। सिर्फ ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ही मोहित हुए थे ऐसा नहीं है। नरेंद्र के मन में भी कुछ चिंगारी उत्पन्न हुई थी कि इस संत के अंदर कुछ है और इसलिए नरेंद्र ने ठाकुर रामकृष्ण परमहंस को पूछा कि आपने भगवान को देखा है? क्या कहती है यह कथा? कथा यह कहती है अगर ठाकुर रामकृष्ण परमहंस यह कह देते कि मैने भगवान को नहीं देखा तो मुझे लगता है कि नरेंद्र उनका शिष्य नहीं बनता। लेकिन ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ने कहा कि हां मैने भगवान को देखा है और भगवान को मैने इस तरह से देखा है जैसे मैं तुम्हे देख रहा हूं। ऐसा कहकर कहते हैं कि ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र के माथे पर अपनी उंगली या अंगूठा लगाया। लगाते ही ऐसा करंट दौड़ा नरेंद्र के शरीर में कि उनको भरोसा हो गया कि ये ठीक कह रहे हैं। कितना बड़ा परिवर्तन हुआ नरेंद्र के अंदर कि स्वामी विवेकानंद बन गए।

वे स्वामी विवेकानंद भविष्यवाणी क्या करके गऐ हैं? पूरे विश्व का इतिहास पढने के बाद स्वामी विवेकानंद ने अपने इतिहास के अनुभव के आधार पर यह घोषणा की कि पूरे विश्व में 17वीं शताब्दी इग्लैंड की थी, आधे से ज्यादा विश्व पर उसका साम्राज्य था, सूर्य अस्त नहीं होता था। उन्हीं स्वामी विवेकानंद ने कहा की 18वीं शताब्दी फ्रांस की थी, 19वीं शताब्दी जर्मनी की थी, 20वीं शताब्दी अमेरिका की थी और वही स्वामी विवेकानंद घोषणा करके गए हैं कि 21वीं शताब्दी जब आएगी तो वह भारत की होगी।

भारत के बारे में जानते हो कि जैसाकि श्रीमती गीता भुक्कल जी कह रही थीं कि यह एक युवा देश है। इसमें 40 वर्ष से नीचे के लोग 67 प्रतिशत हैं। विश्व में ऐसा कोई और देश नहीं है। इसलिए स्वामी विवेकानंद की भविष्यवाणी अगर सही करनी है और वास्तव में यह युवा देश है तो परिवर्तन तो युवाओं से होगा। ये युवा बहुत चमत्कारी परिवर्तन करेंगे। परन्तु इन युवाओं के अंदर जरा प्रेरणा जगाओ, जरा चिंगारी जगाओ, धीरे–धीरे देश में वह जग भी रही है और वह जगाने का सबसे आधारभूत अगर कोई काम करता है तो वह शिक्षक करता है। इसलिए जो भी शिक्षक हैं अपने गौरव को समझें। अपने काम को समझें। अपने को महत्वपूर्ण समझें और जरा प्रेम देकर देखो, जिन बच्चों को आप पढाते हो उनके प्रति जरा आत्मिकता से, जरा आगे बढकर देखो, मुझे ऐसा लगता है कि कोई भी प्रोफैशन इतना अच्छा नहीं है जितना अच्छा प्रोफैशन अध्यापक का है।

मैं भी एक अध्यापक रहा हूं, सात वर्ष तक। बाद में कॉलेज में प्रोफैसर हो गया। आज भी जब मैं घूमता हूं तो कई राजनेता ऐसे हैं जो मुख्यमंत्री तक बन गए, कई मंत्री हैं जो मेरे पढाए हुए हैं, कई आई.ए.एस अधिकारी हैं, कई आई. एफ. एस हैं। जब वे मेरे सामने आते हैं व जिस तरह का सम्मान प्रकट करते हैं तो मन को बहुत

अच्छा लगता है। यह तो छोटी सी बात है। लेकिन देश का विकास इस मानव संसाधन के विकास के माध्यम से आ सकता है और इसके विकास के बिना भौतिक संसाधन का विकास अधूरा है, देश का भविष्य भी अधूरा है। इसलिए आज के इस अवसर पर डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का स्मरण करते हुए, उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, हरियाणा के शिक्षा विभाग को, खासकर मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए मैं आप सबको यह संदेश देना चाहता हूं कि इस मानव संसाधन को संभालिए, देश बिल्कुल आगे जाएगा। आप सब यहां आए इसलिए धन्यवाद देते हुए मैं आभार प्रकट करता हूँ।

जयहिन्द!